



एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 03, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2023)

www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

पोषक तत्वों से भरपूर जैविक खाद: वर्मीकम्पोस्ट

(*मनीषा मीणा¹ एवं मोनिका मीणा¹)

¹महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर

*संवादी लेखक का ईमेल पता: 555manishameena@gmail.com

वर्मीकम्पोस्ट (vermicompost) एक ऐसी खाद है, जिसमें विशेष प्रजाति के केंचुओं द्वारा बनाई जाती है। केंचुओं द्वारा गोबर एवं कचरे को खा कर, मल द्वारा जो चाय की पत्ती जैसा पदार्थ बनता है। यही वर्मीकम्पोस्ट है। यह खाद अब तक किसी प्रकार से तैयार की गई खाद के मुकाबले कई गुणा अधिक पोषक तत्वों से भरपूर है। केंचुए की खाद आम देषी खाद से आठ गुणा, भेड़, बकरी की मींगनी की खाद से चार गुणा एवं मुर्गी की बीट इत्यादि से दो गुणा अधिक कारगर विभिन्न प्रयोगों में आंकी गई है। दूसरी विशेषता केंचुए की खाद ठंडी खाद है। जबकी गोबर एवं मुर्गी की बीट गर्म खाद होने के कारण इसे केंचुए की खाद की अपेक्षा अधिक पानी की आवश्यकता होती है। इसकी तीसरी विशेषता यह है कि इस खाद को किसी भी समय दिया जा सकता है। रबी फसलों में इस खाद के उपयोग से पाला पडने की समस्या से बहुत हद तक छुटकारा पाया जा सकता है।

केंचुए की खाद (vermicompost) बनाने का तरीका

इस खाद के निर्माण हेतु प्रत्येक घर एवं गांव में ही आसानी से उपलब्ध गोबर तथा कचरा एवं केंचुए द्वारा छायादार स्थान पर उचित पानी की उपलब्धता पर बहुत - कम लागत (औसत 20 से 30 पैसे प्रति किलो) में बिना किसी विषिष्ट उपकरणों के, हम खुद के लिए एवं अधिक उत्पादन कर दूसरों को बेचने के लिए इस खाद को तैयार कर सकते हैं।

केंचुए की खाद बनाने हेतु गोबर, कचरा, पानी एवं छायादार स्थान लगभग 6-8 फिट ऊंचाई युक्त स्थान का चुनाव किया जाता है। बेड़े की लम्बाई गोबर की खाद की उपलब्धता पर निर्भर करती है। परंतु चौड़ाई 3 फीट रखी जाती है। उपरोक्त बेड़े पर 3 से 4 इंच मोटी कचरे की परत लगानी चाहिए। यदि गोबर हो तो एक से डेढ़ फिट ऊंचाई तक इस बेड़े को भर देते हैं और इसमें उपयुक्त नमी बनाये रखते हैं। बेड़े को गील करने के 2-3 दिन बाद केंचुए छोड़ दिये जाते हैं। बेड़े में उपयुक्त नमी बनाये रखने हेतु पानी का छिड़काव करते रहना चाहिए। नमी कम होने पर केंचुए मर जाते हैं।

बेड़े में केंचुए छोड़ने के बाद इसको घास- फूस तथा पत्तियों के कचरे से ढक दिया जाता है एवं ऊपर से बोरी द्वारा ढक दिया जाता है। इस प्रक्रिया से उचित नमी एवं रोशनी कम होने के कारण केंचुए लगातार सक्रिय बने रहते हैं। वर्षा एवं सर्दी का मौसम छोड़कर गर्मी में हर रोज पानी का छिड़काव करते रहना चाहिए 35-45 दिनों के अंदर उपरोक्त कचरा/गोबर वर्मीकम्पोस्ट में बदल जाता है।

दस फुट लम्बाई, तीन फुट चौड़ाई तथा डेढ़ फुट ऊंची बेड में 4-5 क्विंटल गोबर आता है। इससे 60-70% तक खाद तैयार होती है। तैयार केंचुए की खाद से केंचुए अलग करने हेतु क्यारी की उपरी सतह से 2-3 इंच तक गुड़ाई कर दें। ऐसा करने से केंचुए नीचे चले जाते हैं। तथा ऊपर की खाद को अलग कर दुबारा गुड़ाई कर दें। इस तरह केंचुए एवं खाद को अलग-अलग किया जा सकता है। 10 फीट की लम्बाई की एक युनिट के लिए 10 किलोग्राम केंचुए केन्द्र की ओर से राष्ट्रीय सम विकास योजना एवं आत्मा के सौजन्य से निःशुल्क दिये जाते हैं।

केंचुए की खाद से होने वाले लाभ

- वर्मीकम्पोस्ट मिट्टी में रोकने की क्षमता में अप्रत्याषित वृद्धि करती हैं और पौधों को सभी पोषक तत्व उपलब्ध कराती हैं।
- खाद्य फसलों में 30-50 %, चारे वाली फसलों में 40 % एवं फल व सब्जियों में 30-100 % तक वृद्धि देखी गई है।
- फसलों एवं फल व सब्जियों की गुणवत्ता, रंग-रूप, पोष्टिकता, स्वाद में तुलनात्मक रूप से आश्चर्यजनक वृद्धि होती है।
- फसलों में कम पानी/सिंचाई की आवश्यकता।
- कम खर्च द्वारा अधिक लाभ प्राप्त करना।
- अधिक मात्रा में उत्पादन कर स्वरोजगार को बढ़ाना।